

# 行走 在 一 禅 的 边 缘

安

雷◎著

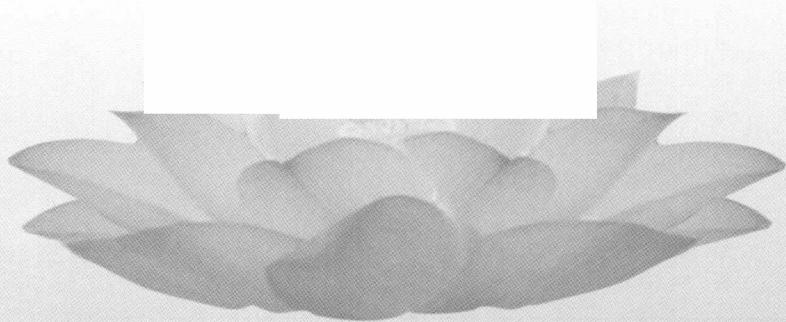
禅是一种人生哲学，栖息自然，使人感受和领悟淡远心境和瞬间永恒，使心灵呈现虚空澄明的状态，空故纳万境。禅善于即色谈空，在诸相中发现品味“真我”，在一花一叶中触及宇宙脉息，在一山一水中展现审美情结。



内蒙古出版集团  
内蒙古人民出版社

行走在  
禪的  
邊緣

雷○著



內蒙古出版集團  
內蒙古人民出版社

**图书在版编目(CIP)数据**

行走在禅的边缘/安雷著. - 呼和浩特:内蒙古人民出版社,  
2009.11

ISBN 978 - 7 - 204 - 09878 - 1

I. ①行… II. ①安… III. ①禅宗－人生哲学－通俗  
读物 IV. ①B946.5 - 49

中国版本图书馆 CIP 数据核字(2009)第 203633 号

**行走在禅的边缘**

---

**作    者** 安 雷

**责任编辑** 杨显文

**内文插图** 马东原

**封面设计** 三丑视觉

**出版发行** 内蒙古出版集团 内蒙古人民出版社

**地    址** 呼和浩特市新城区新华大街祥泰大厦

**印    刷** 呼和浩特市欣欣彩虹印刷包装有限责任公司

**开    本** 710×1000 1/16

**印    张** 23.75

**字    数** 160 千

**版    次** 2010 年 6 月第 1 版

**印    次** 2010 年 6 月第 1 次印刷

**印    数** 1 - 4000 册

**书    号** ISBN 978 - 7 - 204 - 09878 - 1/I · 2169

**定    价** 38.00 元

---

如出现印装质量问题,请与我社联系。联系电话:(0471)4971562 4971659

# 行走在禅的边缘(代序)

禅是“禅那”的简称，意为静虑思修。禅源于佛教，是一种修持方式，主张不依佛典，摆脱桎梏，崇尚心灵感受和顿悟。

禅是一种人生哲学，它栖息于大自然之中，使人感受和领悟淡远的心境和瞬间的永恒，使心灵呈现虚空澄明的状态，空故纳万境。禅善于即色谈空，在万法诸相中发现“真我”、品味“真我”，在一花一叶中触及宇宙脉息，在一山一水中展现审美情结。

禅有着心灵的自由，随处作主，立处皆真，如人饮水，冷暖自知。

禅的目的是除去一切表象和非本质的东西，获得那种靠直觉领悟到的真理，通过体验和心悟的神奇会合，得到对“我”、“真实”的充分觉醒，是自性的返照、发掘和开拓。

禅认为一切众生皆有佛性，禅可以帮助我们挽回迷失的本源。

禅热衷于虚空、大小、动静、盈空，对审美有着本质的引导和启发。

安 雷

2010 年 6 月



## 目 录

|               |      |
|---------------|------|
| 心 灯 .....     | (1)  |
| 见山是山 .....    | (2)  |
| 仁者心动 .....    | (4)  |
| 忘却来时路 .....   | (5)  |
| 庭前柏树 .....    | (6)  |
| 放 下 .....     | (7)  |
| 心中这个 .....    | (8)  |
| 一片闲田地 .....   | (9)  |
| 直指人心 .....    | (11) |
| 怎样才能避免 .....  | (13) |
| 别离庐山 .....    | (14) |
| 这头高那头低 .....  | (15) |
| 来时无迹去无踪 ..... | (16) |
| 无生灭无去来 .....  | (17) |



|          |        |
|----------|--------|
| 不如小丑     | ( 19 ) |
| 你就是佛     | ( 21 ) |
| 仰山破镜     | ( 22 ) |
| 无位真人     | ( 23 ) |
| 空不自生     | ( 25 ) |
| 卧如来      | ( 26 ) |
| 沩仰采茶     | ( 27 ) |
| 为止小儿啼    | ( 28 ) |
| 禅心无滞境    | ( 29 ) |
| 白居易问禅    | ( 30 ) |
| 应无所住而生其心 | ( 31 ) |
| 鲜花开放     | ( 32 ) |
| 通身无影像    | ( 33 ) |
| 狗有佛性吗    | ( 35 ) |
| 孤峰顶上     | ( 36 ) |
| 寻找羚羊     | ( 37 ) |
| 不知最亲切    | ( 39 ) |
| 云归山谷静    | ( 40 ) |
| 离家舍不在途中  | ( 41 ) |
| 金佛不渡炉    | ( 42 ) |
| 提起放下     | ( 43 ) |
| 独坐大雄峰    | ( 44 ) |
| 开悟之眼     | ( 45 ) |
| 无我相      | ( 46 ) |
| 心中无崖     | ( 47 ) |



|         |      |
|---------|------|
| 心即佛     | (49) |
| 又挂上了    | (50) |
| 禅师的兰花   | (51) |
| 一任莓苔满地侵 | (52) |
| 万物一体    | (53) |
| 银碗盛雪    | (55) |
| 痛并快乐着   | (56) |
| 妙 音     | (57) |
| 古镜已磨    | (58) |
| 百尺竿头    | (60) |
| 心舍于有无   | (61) |
| 万法归一    | (62) |
| 凡圣两忘    | (63) |
| 莫向身外求   | (65) |
| 不著相     | (66) |
| 本来面目    | (68) |
| 自然禅     | (70) |
| 除去闲名    | (71) |
| 关照内心    | (72) |
| 一村菊香    | (73) |
| 满 了     | (74) |
| 何来层次    | (75) |
| 堪听偃溪流水意 | (76) |
| 敲罄拨智    | (77) |
| 牧童横笛望源归 | (79) |



|         |         |
|---------|---------|
| 天堂乎地狱乎  | ( 80 )  |
| 魅力施主    | ( 81 )  |
| 送一轮明月   | ( 83 )  |
| 机敏的鱼    | ( 84 )  |
| 梅子熟了    | ( 85 )  |
| 空费草鞋钱   | ( 87 )  |
| 无事是好事   | ( 88 )  |
| 夜静春山空   | ( 89 )  |
| 性相一如    | ( 90 )  |
| 落花啼鸟    | ( 91 )  |
| 犀牛扇     | ( 92 )  |
| 投 子     | ( 93 )  |
| 照顾脚下    | ( 95 )  |
| 依然叫它作香匙 | ( 96 )  |
| 静       | ( 97 )  |
| 谁在井中    | ( 98 )  |
| 无心之茶    | ( 99 )  |
| 拨破湘江月   | ( 101 ) |
| 打坐非禅    | ( 102 ) |
| 雨雾长空静   | ( 103 ) |
| 一与三     | ( 104 ) |
| 无事是贵人   | ( 106 ) |
| 卖饼人家    | ( 107 ) |
| 镜清的雨滴   | ( 108 ) |
| 画饼成禅    | ( 109 ) |



|         |         |
|---------|---------|
| 月莹池塘静   | ( 111 ) |
| 南泉赏花    | ( 112 ) |
| 锁虚空     | ( 113 ) |
| 一口吸尽西江水 | ( 115 ) |
| 倩女离魂    | ( 117 ) |
| 嫌什么?    | ( 118 ) |
| 陇上写春    | ( 120 ) |
| 柑桔之分    | ( 121 ) |
| 一切皆禅    | ( 122 ) |
| 杯中月     | ( 124 ) |
| 多捡一些    | ( 125 ) |
| 淡妆浓抹总相宜 | ( 126 ) |
| 观 心     | ( 127 ) |
| 归鸟尽迷巢   | ( 128 ) |
| 吃茶去     | ( 129 ) |
| 水如天     | ( 131 ) |
| 善自珍重    | ( 132 ) |
| 春风未放百花舒 | ( 133 ) |
| 我的相貌    | ( 134 ) |
| 放下得道    | ( 136 ) |
| 盐的味道    | ( 137 ) |
| 本来成现不须参 | ( 138 ) |
| 无风起浪    | ( 139 ) |
| 罢钓归来不系船 | ( 140 ) |
| 避寒暑     | ( 141 ) |



|         |         |
|---------|---------|
| 竹篦触背    | ( 142 ) |
| 无缝塔     | ( 143 ) |
| 好雪不落别处  | ( 145 ) |
| 法演的“空”  | ( 146 ) |
| 灵 照     | ( 147 ) |
| 桥流水不流   | ( 148 ) |
| 清心好见性   | ( 150 ) |
| 如刀划水    | ( 151 ) |
| 吾心见境尽为非 | ( 152 ) |
| 平常心是道   | ( 153 ) |
| 荣者枯者    | ( 154 ) |
| 云在青天水在瓶 | ( 156 ) |
| 万里无云万里天 | ( 157 ) |
| 修竹引风来   | ( 158 ) |
| 桶底脱     | ( 159 ) |
| 心安适然    | ( 160 ) |
| 日面佛月面佛  | ( 161 ) |
| 无所牵挂    | ( 162 ) |
| 正 反     | ( 163 ) |
| 雨过清苔润   | ( 164 ) |
| 八风吹不动   | ( 165 ) |
| 莲 花     | ( 167 ) |
| 我不是众生   | ( 168 ) |
| 借住与你    | ( 169 ) |
| 拨火悟道    | ( 171 ) |



|         |         |
|---------|---------|
| 芭蕉径     | ( 173 ) |
| 本来无一物   | ( 174 ) |
| 承 担     | ( 176 ) |
| 度人度己    | ( 177 ) |
| 宽 容     | ( 178 ) |
| 马上剃度    | ( 179 ) |
| 香严击竹    | ( 181 ) |
| 磨砖成镜    | ( 183 ) |
| 谁束缚汝    | ( 185 ) |
| 放下提着    | ( 186 ) |
| 为己所迷    | ( 187 ) |
| 心无挂碍    | ( 188 ) |
| 江上秋夜    | ( 190 ) |
| 天堂与地狱   | ( 191 ) |
| 寸丝不挂    | ( 192 ) |
| 喧哗声里共忘机 | ( 193 ) |
| 眼横鼻直    | ( 194 ) |
| 落花啼鸟一般春 | ( 195 ) |
| 咸淡有味    | ( 196 ) |
| 南泉救鹅    | ( 197 ) |
| 慧可安心    | ( 198 ) |
| 青山覆白云   | ( 199 ) |
| 诗偈论道    | ( 200 ) |
| 无道心     | ( 201 ) |
| 公开地爱    | ( 202 ) |



|             |         |
|-------------|---------|
| 大千为床        | ( 203 ) |
| 解 脱         | ( 204 ) |
| 不信是真谛       | ( 205 ) |
| 一与十         | ( 206 ) |
| 凡圣两忘        | ( 208 ) |
| 禅 茶         | ( 210 ) |
| 以心传心        | ( 212 ) |
| 廓然无圣        | ( 213 ) |
| 石烂松枯不记年     | ( 215 ) |
| 我自调心        | ( 216 ) |
| 月下披云笑一声     | ( 218 ) |
| 无姓是祖        | ( 219 ) |
| 没时间老        | ( 220 ) |
| 茶禅一味        | ( 221 ) |
| 我是侍者        | ( 222 ) |
| 有无之别        | ( 224 ) |
| 弄花香满衣       | ( 226 ) |
| 梅子熟了        | ( 227 ) |
| 得指忘月        | ( 228 ) |
| 饥来吃饭困来眠     | ( 229 ) |
| 影落澄潭几个知     | ( 230 ) |
| 如何是真月       | ( 231 ) |
| 渠今正是我,我今不是渠 | ( 232 ) |
| 吹折门前一枝松     | ( 234 ) |
| 青山面目依然在     | ( 235 ) |



|         |       |
|---------|-------|
| 方丈与乞丐   | (236) |
| 色即是空    | (237) |
| 心性本同    | (239) |
| 唤我旧时名   | (240) |
| 还好,有我在  | (241) |
| 鹏鸟与麻雀   | (243) |
| 古 镜     | (245) |
| 汝心明净    | (246) |
| 思 量     | (247) |
| 自在自得    | (248) |
| 行恶与修善   | (249) |
| 草木即佛    | (250) |
| 须弥藏芥子   | (252) |
| 从心流出    | (253) |
| 惠泉妙语    | (254) |
| 心 眼     | (255) |
| 一树春风有两般 | (257) |
| 返 照     | (258) |
| 无处更留心   | (259) |
| 万法唯识    | (260) |
| 山高怎阻野云飞 | (262) |
| 镇州萝卜    | (263) |
| 布袋和尚    | (265) |
| 一宿觉     | (266) |
| 只许佳人独自知 | (268) |



|         |         |
|---------|---------|
| 水车原理    | ( 269 ) |
| 千年钻故纸   | ( 271 ) |
| 提起放下    | ( 272 ) |
| 敬钟如佛    | ( 273 ) |
| 棋理禅机    | ( 274 ) |
| 是邪是正    | ( 275 ) |
| 空       | ( 276 ) |
| 泡茶的心    | ( 278 ) |
| 正受烧书    | ( 279 ) |
| 禅家能自静   | ( 280 ) |
| 佛与魔鬼    | ( 281 ) |
| 春到花便开   | ( 283 ) |
| 禅师的宝座   | ( 284 ) |
| 行看流水坐看云 | ( 286 ) |
| 不曾空过    | ( 287 ) |
| 服 从     | ( 288 ) |
| 海月无影    | ( 289 ) |
| 禅与牛     | ( 291 ) |
| 背柴走江湖   | ( 293 ) |
| 月亮的样子   | ( 294 ) |
| 通身是眼    | ( 295 ) |
| 缠 缚     | ( 296 ) |
| 且喜天下太平  | ( 297 ) |
| 解铃人     | ( 298 ) |
| 牵 缠     | ( 299 ) |



|          |         |
|----------|---------|
| 冰壶含宝月    | ( 300 ) |
| 自家宝贝     | ( 301 ) |
| 五 随      | ( 302 ) |
| 心即是佛     | ( 303 ) |
| 日日是好日    | ( 304 ) |
| 善昭的诗     | ( 305 ) |
| 心无外物     | ( 306 ) |
| 哔啄之机     | ( 308 ) |
| 我不是佛     | ( 310 ) |
| 澄心万虑忘    | ( 311 ) |
| 一尊佛      | ( 312 ) |
| 体露金风     | ( 313 ) |
| 云水随缘     | ( 315 ) |
| 谁共澄潭照影寒  | ( 316 ) |
| 禅也要分胜负吗  | ( 317 ) |
| 滞句者迷     | ( 318 ) |
| 了然尼师     | ( 319 ) |
| 冰霜不自寒    | ( 320 ) |
| 纯洁的心     | ( 321 ) |
| 一日不作一日不食 | ( 323 ) |
| 唯有清风明月知  | ( 324 ) |
| 你点的是哪个心  | ( 325 ) |
| 万古长空一朝风月 | ( 326 ) |
| 大觉道钦     | ( 328 ) |
| 你我无别     | ( 329 ) |



|         |         |
|---------|---------|
| 只这个     | ( 331 ) |
| 无我之境    | ( 332 ) |
| 悬 挂     | ( 333 ) |
| 凭君仔细看   | ( 334 ) |
| 佛不曾迷    | ( 335 ) |
| 老僧半间云半间 | ( 336 ) |
| 知解宗徒    | ( 337 ) |
| 默契自如    | ( 338 ) |
| 野鸭飞了    | ( 339 ) |
| 寒山与拾得   | ( 340 ) |
| 南岳怀让    | ( 341 ) |
| 思       | ( 342 ) |
| 即心即佛    | ( 344 ) |
| 天上有星皆拱北 | ( 345 ) |
| 净瓶与古佛   | ( 346 ) |
| 幻化身心若春雪 | ( 347 ) |
| 空廊之音    | ( 348 ) |
| 问者不近    | ( 349 ) |
| 吾名惠寂    | ( 350 ) |
| 无处不周    | ( 351 ) |
| 婆子的神通   | ( 352 ) |
| 黄庭坚闻香   | ( 354 ) |
| 诸法如义    | ( 356 ) |
| 泯除拣择    | ( 357 ) |
| 禅师的学问   | ( 359 ) |



|            |         |
|------------|---------|
| 鹭入芦花 ..... | ( 360 ) |
| 纵横自在 ..... | ( 361 ) |
| 捉虚空 .....  | ( 362 ) |
| 庭前嫩竹 ..... | ( 363 ) |
| 如水归水 ..... | ( 364 ) |